❁ 16 जुलाई 2014 की मुरली से मुख्य पॉईन्टस् ❁

✺ ज्ञान-

1] यदि एक बाप से प्यार है तो बाप की नज़र उन्हें निहाल कर देगी, वे पूरा नष्टोमोहा होंगे, जिन्हें बेहद के बाप का प्यार पसन्द आ गया, वह और किसी के प्यार में फँस नहीं सकते, उनकी बुद्धि झूठ खण्ड के झूठे मनुष्यों से टूट जाती है। बाबा तुम्हें अभी ऐसा प्यार देते हैं जो अविनाशी बन जाता है। सतयुग में भी तुम आपस में बहुत प्यार से रहते हो।

2] धनी धोणी किसका नहीं है इसलिए भक्ति मार्ग में याद करते हैं। परन्तु कायदेसिर भक्ति का भी समय होता है आधाकल्प।

3] सतयुगी राज्य को मोहजीत राजा, रानी तथा प्रजा का राज्य कहा जाता है। वहाँ कभी कोई रोते नहीं। दुःख का नाम नहीं। तुम बच्चे जानते हो बरोबर भारत में हेल्थ, वेल्थ और हैप्पीनेस था, अब नहीं है क्योंकि अभी रावण राज्य है।

4] मन्दिरों में भल जाते हैं परन्तु उनकी बायोग्राफी कुछ नहीं जानते। जैसे गुड़ियों की पूजा होती है। देवियों की पूजा करते हैं, रचकर खूब श्रृंगार कराकर भोग आदि लगाते हैं। परन्तु वह देवियाँ तो कुछ भी खाती नहीं। खा जाते हैं ब्राह्मण लोग। क्रियेट फिर पालना कर विनाश कर देते, **इसको कहा जाता है अन्धश्रद्धा**। सतयुग में यह बातें होती नहीं। यह सब रस्म रिवाज निकलती है कलियुग में। तुम पहले-पहले एक शिवबाबा की पूजा करते हो, जिसको अव्यभिचारी राइटियस पूजा कहा जाता है। फिर होती है व्यभिचारी पूजा। 'बाबा' अक्षर कहने से ही परिवार की खुशबू आती है। तुम भी कहते हो ना तुम मात-पिता.... तुम्हारे इस ज्ञान देने की कृपा से हमको सुख घनेरे मिलते हैं। बुद्धि में याद है कि हम पहले-पहले मूलवतन में थे। वहाँ से यहाँ आते हैं शरीर लेकर पार्ट बजाने। पहले-पहले हम दैवी चोला लेते हैं अर्थात् देवता कहलाते हैं। फिर क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र वर्ण में आते भिन्न-भिन्न पार्ट बजाते हैं। यह बातें तुम पहले नहीं जातने थे। अब बाबा ने आकर आदि-मध्य-अन्त का नॉलेज का तुम बच्चों को दिय है। अपनी भी नॉलेज दी है कि मैं इस तन में प्रवेश करता हूँ। यह अपने 84 जन्मों को नहीं जानते थे। तुम भी नहीं जानते थे। श्याम-सुन्दर का राज़ तो समझाया है। यह श्रीकृष्ण है नई दुनिया का पहला प्रिन्स और राधे सेकण्ड नम्बर में। थोड़े वर्ष का फर्क पड़ता है। सृष्टि के आदि में इनको पहले नम्बर में कहा जाता है इसलिए ही कृष्ण को सब प्यार करते हैं, इनको ही श्याम और सुन्दर कहा जाता है। स्वर्ग में तो सब सुन्दर ही थे। अभी स्वर्ग कहाँ है। चक्र फिरता रहता है। ऐसे नहीं कि समुद्र के नीचे चले जाते हैं। जैसे कहते हैं लंका, द्वारिका नीचे चली गई। नहीं, यह चक्र फिरता है। इस चक्र को जानने से तुम चक्रवर्ती महाराजा-महारानी विश्व के मालिक बनते हो। प्रजा भी तो अपने को मालिक समझती है ना। कहेंगे, हमारा राज्य है। भारतवासी कहेंगे हमारा राज्य है। भारत मान है। हिन्दुस्तान नाम रांग है। वास्तव में आदि सनातन देवी-देवता धर्म ही है। परन्तु धर्म भ्रष्ट, कर्म भ्रष्ट होने कारण अपने को देवता नहीं कह सकते। यह भी ड्रामा की नूँध है। नहीं तो बाप कैसे आकर फिर से देवी-देवता धर्म की स्थापना करे। आगे तुमको भी इन सब बातों का मालूम नहीं था, अब बाप ने समझाया है।

5] कोई भी देहधारी के पास यह रचयिता और रचना के आदि-मध्य-अन्त की नॉलेज हो न सके। यह नॉलेज होती ही है रूहानी बाप के पास। उनको ही ज्ञान-ज्ञानेश्वर कहा जाता है। ज्ञान-ज्ञानेश्वर तुमको ज्ञान देते हैं, राज-राजेश्वर बनाने के लिए इसलिए इसको राजयोग कहा जाता है। बाकी वह सभी हैं हठयोग।

6] यहाँ कलियुग में हैं सब पुजारी, सतयुग में है पूज्य। तो बाप पूज्य बनाने के लिए आते हैं। पुजारी बनाने वाला है रावण। यह सब जानना चाहिए ना।

...2

7] यह है सबसे बड़े ते बड़ा तीर्थ। जहाँ बेहद का बाप बच्चों को बैठ सृष्टि के आदि, मध्य, अन्त का राज़ समझाते हैं और सर्व की सद्गति करते हैं। यह बहुत बड़ा तीर्थ हैह। भारत की महिमा अपरम्पार है। परन्तु यह भी तुम समझ सकते हो– भारत है वन्डर ऑफ वर्ल्ड।

8] सतयुग में सूर्यवंशी फिर सेकण्ड ग्रेड में है चन्द्रवंशी। तुम हो आस्तिक, वह हैं नास्तिक।

9] पतित-पावन एक बाप ही है। फिर पावन बन सब घर चले जायेंगे। सबके लिए यह नॉलेज है। यह तो सहज राजयोग और सहज ज्ञान।

✺ योग-

1] वह तो सिर्फ वन्डर ऑफ दी वर्ल्ड। नाम ही है पैराडाइज़। उनका बाप मालिक बनाते हैं। वह तो सिर्फ वन्डर्स दिखाते हैं, परन्तु तुमको तो बाप उसका मालिका बनाते हैं इसलिए अब **बाप कहते हैं निरन्तर मुझे याद करो।** सिमर-सिमर सुख पाओ, कलह कलेष मिटे सब तन के, जीवनमुक्ति पद पाओ। पवित्र बनने के लिए याद की यात्रा भी बहुत जरूरी है। मनमनाभव, तो फिर अन्त मती सो गति हो जायेगी।

2] अब बाप सब धर्म वालों के लिए एक ही बात सुनाते हैं। कहते हैं अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो तो तुम्हारे पाप कट जायेंगे। अब याद करना तुम बच्चों का काम है, इसमें मूँझने की बात ही नहीं है।

✺ धारणा-

1] मीठे बच्चे– याद से ही बैटरी चार्ज होगी, शक्ति मिलेगी, आत्मा सतोप्रधान बनेगी इसलिए याद की यात्रा पर विशेष अटेन्शन दो।

2] सबसे बड़े ते बड़ा दु:ख देने वाला है काम विकार इसलिए बाप कहते हैं– मीठे-मीठे बच्चों, काम विकार पर जीत पहतो तो जगतजीत बनेंगे। इस लक्ष्मी-नारायण को जगत जीत कहेंगे ना। तुम्हारे सामने एम ऑबजेक्ट खड़ी है।

3] एक सेकण्ड भी धोखा देने वाला हो सकता है इसलिए स्वयं को विशेष आत्मा समझकर हर संकल्प, बोल और कर्म करो और सदा रूहानी मौज में रहो।

4] अचल बनना है तो व्यर्थ और अशुभ को समाप्त करो।

✺ सेवा-

1] ----